VOL- VIII ISSUE- XI NOVEMBER 2021 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.149 ISSN 2349-638x

जयप्रकाश कर्दम के 'छप्पर' उपन्यास में अभिव्यक्त संवैधानिक मूल्य

डॉ. आशा दत्तात्रय कांबळे
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभागप्रमुख
एस.एस.व्ही.पी.एस महाविद्यालय
शिदंखेडा जि.धुलिया महाराष्ट्र

इस वर्ष हम आजादी का अमृत महोत्सव यानी हम आजादी ७५ वी वर्षगांठ मना रहें है। यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है कि, इस अवसर पर हमारे देश में अनेक तरह के कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। हमारे संविधान ने जो हमें मूल्य दिये हुये है उन मूल्यों को हमें सुरक्षित रखना है और उसका सही दिशा में उपयोग करना है। यह आत्मनिर्भर नये भारत के लिए गर्व का विषय होगा हमारे संविधान ने हमें स्वातंत्र, समता, बंधुता, सामाजिक न्याय, शिक्षा, संगठन इ. मूल्यों के प्रति हमें अवगत कराया है। संविधान निर्माताने समानता के आदर्शो को संविधान की प्रस्तावना में एक गर्व का स्थान दिया है। और सभी प्रकार की जैसे शासक तथा शासित आधारित अथवा जाति तथा लिंग आधारित असमानताओं को समाप्त किया जाय। आजादी के बाद हमने संवैधानिक मूल्यों से ज्यादा हमने अपने मतों को अधिक महत्व दिया है, भारत में ७५ बरसों में अगर कोई सबसे बडी गलती हुयी है तो वह है समाज को संवैधानिक न बनने देने की, समाज की ज्यादातर व्यवस्थाएँ आज भी संवैधानिक मूल्यों के खिलाफ है। अगर हमने संवैधानिक मूल्यों को स्थापित किया होता तो आज भारत निश्चित रुप से भीतर से इतना भयभीत और निराश नहीं होता।

इक्कीसवी सदी में सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, शैक्षिक, तथा राजनीतिक स्थिति में एक विशिष्ठ समाज को आज भी संवैधानिक मूल्यों के अधिकारों के लिए लडना पड रहा है। उनमें दलित, आदिवासी, तथा नारी आती है। दलित साहित्य के लेखन की यात्रा अठरहवी-उन्नीसवी सदी के सामाजिक, राजनीतिक आंदोलनों और आजादी के बाद संविधान में मिले नये स्पेस से शुरु होती है। दलित साहित्य लेखन में लेखन करनेवाले दलित लेखक इन्होंने अपने भीतर की प्रतिभा को जगाते हुये दलित पात्रों के जीवन को समग्रता से प्रस्तुत कर उनके जीवन के सभी पहलूओं को उजागर करने का प्रयास किया। उनमें जयप्रकाश कर्दम जी ने अपने उपन्यास "छप्पर" में दलितों की मानसिक स्थिति का वर्णन करते हुये देश तथा समाज की परिस्थितियों, परंपराओं और नीतियों के विरुध्द विद्रोह करने के उद्देश्य से यह उपन्यास लिखा। 'छप्पर' यह हिंदी का पहला दलित उपन्यास माना जाता है। इस उपन्यास में फुले-शाहू-आंबेडकर के विचारों का प्रभाव दिखाई देता है। कर्दमजी का यह उपन्यास लिखने का उद्देश्य विषमतावादी समाज व्यवस्था में स्थित मूल परिस्थितियों तथा प्रवृत्तियों में परिवर्तन करना रहा है। जयप्रकाश कर्दमजी डॉ.बाबासाहब आंबेडकर जी के विचारों को समाज तथा साहित्य के भीतर संप्रेषित करने काम कर रहे है। इसलिए 'छप्पर' उपन्यास में अभिव्यक्त संवैधानिक मूल्यों की चर्चा निम्न के अनुसार है-

'छप्पर उपन्यास में चित्रित स्वतंत्रता का भाव' -

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी ने अपने जीवन विषयक तत्वज्ञान में व्यक्ति की स्वतंत्रता को अधिक महत्व दिया। देश के हर व्यक्ति को लेखन, वाचन, अभिव्यक्ति तथा वैचारिक स्वातंत्र मिलने की आवश्यकता है तभी देश और समाज का विकास

हो सकता है। स्वतंत्रता के इस महत्व को जानकर डॉ बाबासाहब जी ने स्वतंत्र भारत के संविधान में “स्वातंत्र, समता तथा बंधुता” का प्रावधान किया। परिणाम स्वरुप इस देश का हर व्यक्ति सामाजिक, धार्मिक, बौध्दिक तथा आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र हो लेकिन पुरानी रुढी-परंपराओं तथा सवर्ण मानसिकता के कारण आज भी समाज में कहीं-कहीं दलितों को स्वतंत्रता का अधिकार प्राप्त नहीं है। उन्हें इन मुलभूत अधिकारों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना पडता है। इसका चित्रण छप्पर इस उपन्यास में चित्रित है।

‘छप्पर’ उपन्यास व्यक्ति स्वतंत्रता के महत्व को दर्शाता है। इस उपन्यास में संवैधानिक अधिकार को रजनी के माध्यम से स्पष्ट करते हुए लेखक लिखते है कि,“संविधान के अनुसार देश के प्रत्येक नागरिक को सम्मान और स्वाभिमानपुर्वक जीवन जीने का हक है, प्रत्येक व्यक्ति को अपनी स्वेच्छा के अनुसार व्यवसाय चुनने का तथा जीवन की दिशा निर्धारित करने का स्वतंत्रता है।”१ लेकिन ठाकूर साहब या काणे पंडित जैसे सवर्ण लोग अपने स्वार्थ के लिए दलितों को पढने-लिखने तथा अन्यत्र नौकरी करने की स्वतंत्रता देना नहीं चाहते। दलितों का शोषण करनेवाली ऐसी सवर्ण मानसिकता का कडा प्रतिरोध करते हुए रजनी अपने पिता ठाकूरसाहब से कहती है कि, “अपने स्वार्थ के खातिर दुसरों को बलि बनाना तो उचित नहीं है। किसी को मुर्ख बनाकर धोखे में रखकर अथवा जबरदस्ती से अधिक समय तक उसका शोषण नहीं किया जा सकता। व्यक्ति हो या वर्ग, सब स्वतंत्र और स्वावलंब का जीवन जीना चाहते है अभाव और शोषण का जीवन कोई जीना नहीं चाहता। समय करवट ले रहा है लोग अपने अधिकारों के प्रति जागृत हो रहे है, दलित शोषित लोग अन्याय और शोषण की जंजीरों से मुक्त होने के लिए छटपटाने लगे है।”२ इस तरह लेखक ने समय के साथ दलितों में अपने अधिकारों के प्रति जागृत हो चेतना की ओर संकेत किया है।

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी व्यक्ति को आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र होनेपर अधिक बल देते थे। इस बात को स्पष्ट करते हुए लेखक ने यह चित्रित किया है कि मातापूर गॉव के दलितों ने सहकारी समिति की स्थापना की जिससे लोगों की सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ-साथ उसमें एकजुटता तथा पारस्पारिक सहयोग की भावना का विकास हुआ यह आंबेडकरवादी विचार “छप्पर” उपन्यास में लेखक ने व्यक्त किये है।

‘छप्पर’ उपन्यास में चित्रित समतामूलक भाव -

भारतीय समाज धर्मधिष्ठित होने के कारण उसमें विषमता फैली हुयी है ऐसे विषमतावादी समाज व्यवस्था मे समता प्रस्थापित करना आंबेडकरवाद का प्रमुख लक्ष्य रहा है। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी ने अपने जीवन विषयक तत्वज्ञान में समता इस मूल्य को स्वतंत्रता से बढकर माना है। अपने देश में फैली विषमता को दूर करने के उद्देश्य से ही उन्होंने संविधान में ‘समता’ का प्रावधान किया है। हिंदी के दलित उपन्यासकारों ने भी इस तत्व का चित्रण अपने उपन्यासों में किया है। ‘छप्पर’ उपन्यास में लेखक ने स्पष्ट किया है कि, विषमतावादी व्यवस्था हमारे समाज में असमानता और अन्याय को जन्म देती है, ऐसी विषमतावादी समाज व्यवस्था को बदलने की आवश्यक पर बल देते हुए लेखक चंदन के माध्यम से कहते है कि, “हम व्यवस्था के विरोधी है, व्यक्ति के नहीं। हमारी लडाई व्यवस्था के खिलाफ है, किसी व्यक्ति से कोई द्वेष नहीं है। हमें यदि कोई व्यक्ति इसमें बाधक होगा तो उसका विरोध अवश्य किया जाएगा। फिर वह चाहे कोई भी हो हम न्याय और समता के पक्षधर है और समानता प्राप्त करने के लिए हमें व्यवस्था को बदलना है। क्योंकि हमारी समाज व्यवस्था अन्याय और असमानता को जन्म देनेवाली है।”३

वर्तमान समय में भी इस विषमतावादी समाज व्यवस्था में दलितों तथा पिछडों को समानता के अवसर दिए जाते है। लेकिन इसमें जाति की बाधा उपस्थित होती है। इस यथार्थ को लेखक ने चंदन तथा उनके मित्रों के माध्यम से स्पष्ट किया

है। ये सभी मित्र अपनी क्षमता के अनुसार व्यवसाय तथा अन्य क्षेत्रों में काम करना चाहते है। उन्हें ऐसे समानता के अवसर दिये जाते है लेकिन दलितों के लिए अवसर की समानता का कोई मतलब नहीं है, क्योंकि जाति की बाधा दलित को अवसर का उपभोग नहीं करने देती। चंदन अपने मित्र रामहेत को समझाते हुये कहता है, "माना कि तुममें अपना व्यवसाय करने का इरादा है और तुम योग्य भी हो, लेकिन इस जाति के लेबल से कैसे पार पाओगे जो तुम्हारे रास्ते का पत्थर बना हुआ है। इस पत्थर को कैसे हटाओगे तुम"?४ इस प्रश्न का उत्तर भी लेखक स्वंय बताते है कि समाज में समता प्रस्थापित करने के लिए दलितों को हर क्षेत्र में अपनी हैसियत बनाने की आवश्यकता है, सामाजिक सम्मान प्राप्त करने की आवश्यकता है। चंदन के शब्दों में, "हमें प्रत्येक क्षेत्र में आना चाहिए केवल सामाजिक रुप से ही हमारी प्रस्थिति निम्न नहीं है, बल्कि आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षिक, प्रत्येक क्षेत्र में हम पिछडे हुए है। हमें प्रत्येक क्षेत्र में ऊपर आने की जरुरत है, लेकिन सबसे पहली जरुरत है- सामाजिक सम्मान की। यदि तुम्हारी सामाजिक हैसियत है, तो तुम्हारे लिए हर कहीं सम्मान होगा। हमारा अपना नीला आकाश, इस नीले आकाश की नई दुनिया हमारी होगी। यहाॅ कोई ऊंच- नीच, छोटा-बडा नहीं होगा। सभी दलित जातियाॅ मिलजुलकर एकता के साथ संगठित होकर रहेगी। वह अपना आपस का जातिभेद भूलकर समता, सम्मान और बंधुता के साथ प्रगति के पथ पर आगे बढेगें। तब हमें कोई भी मांग-मेहतर नहीं कहेगा, हम दलित भी ऊंचाइयों को छू सकेंगे। सामाजिक आंदोलन का नीला झंडा हम आकाश तक फहरायेगें।"५ इस प्रकार की समता समाज में प्रस्थापित होने पर ही डॉ. आंबेडकर जी के सपनों का भारत निर्माण होगा।

'छप्पर' उपन्यास में चित्रित बंधुतामूलक भाव -

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी ने अपने जीवन विषयक तत्वज्ञान में 'बंधुता'इस तत्व को सर्वोपरी माना है। उन्होंने 'स्वातंत्र' और 'समता' से बढकर सर्वोच्च स्थान 'बंधुता' को दिया है। वे कहते है, "मैं बंधुता को सर्वोच्च स्थान प्रदान करता हू, क्योंकि स्वातंत्र और समता को नकारा जाने का समय बंधुभाव ही सच्चे अर्थ में रक्षक होता है। सहभाव ही बंधुता का दुसरा नाम है।"६ इसलिए आंबेडकरवाद का मानना है कि बंधुता के कारण ही समाज में स्नेह तथा प्रेमभाव विकसीत हो सकता है। मानव कल्याण की दृष्टि से बंधुता का होना आवश्यक है। ऐसी बंधुता को समाज में प्रस्थापित करने का प्रयास दलित लेखकों ने अपने उपन्यासों के माध्यम से किया है। 'छप्पर' उपन्यास में चंदन को समाज में बंधुभाव का निर्माण करने का कार्य करते हुए चित्रित किया है। चंदन लोगों को समझाता है कि,"हम चाहते हैं सारा समाज सदैव शांति और सद्भाव से मिल-जुलकर रहे। इसलिए हमें किसी के प्रति घृणा या उपेक्षा का भाव नहीं रखना है। हमें चाहिए कि हम दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा हम अपने लिए चाहते है।"७ इसी प्रकार के प्यार और सद्भाव की अपेक्षा सुक्खा भी करता है। वह रजनी से कहता है, "हमारी तो यही कामना है कि लोग कटुता और कठोरता त्याग कर प्रेम और सद्भाव के साथ रहें, दूसरों को सम्मान दें तथा खुद भी सम्मान के साथ जीएं। सच में परस्पर प्यार और सद्भाव से बढकर कोई चीज नहीं है।"८

'छप्पर' उपन्यास में चित्रित सामाजिक न्याय का भाव -

भारत में विषमतावादी समाज व्यवस्था के कारण धर्म, वर्ण, वर्ग, अर्थ तथा जातियता के आधार पर सवर्ण-अवर्ण, स्पृश्य-अस्पृश्य, उच्च-नीच, मालिक-मजदूर आदि प्रकार का भेद दिखाई देता है। इस कारण समाज में गरीब, शोषित, पीडित तथा दलित वर्ग के लोगों को समान न्याय नहीं मिलता। इसलिए इस समाज व्यवस्था में हर व्यक्ति को समान न्याय और अधिकार प्राप्त कराने के उद्देश्य से ही डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी ने संविधान में स्वातंत्र, समता, बंधुता के साथ-साथ सामाजिक न्याय का भी प्रावधान रखा है। इसी सामाजिक न्याय को समाज में प्रस्थापित करना ही आंबेडकरवाद का लक्ष्य रहा हिंदी के दलित

उपन्यासकारों ने भी इसी सामाजिक न्याय को महत्व देते हुए उपन्यासों के माध्यम से इसे समाज में प्रस्थापित करने की अपेक्षा व्यक्त की है।

'छप्पर' में लेखक ने नायक चंदन द्वारा समाज में 'सामाजिक न्याय' को प्रस्थापित करते हुए चित्रित किया है। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी का मानना था कि दलितों का सामाजिक स्तर ऊंचा होने के लिए उन्हें गुलामी से मुक्त होना चाहिए। यही आंबेडकरवादी विचार 'छप्पर' उपन्यास में लेखक ने व्यक्त किया है। चंदन दलितों को सामाजिक सम्मान मिलने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहता है कि, "हमें प्रत्येक क्षेत्र में आना चाहिए, केवल सामाजिक रुप से ही हमारी प्रस्थिति निम्न है, बल्कि आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षिक प्रत्येक क्षेत्र में ऊपर आने की जरुरत है, लेकिन सबसे पहली जरुरत है- सामाजिक सम्मान की।"९ दलितों का सामाजिक विकास होने के दृष्टि से उनकी आर्थिक, प्रशासनिक और कानूनी, हर तरह की मदद करने की अपेक्षा लेखक इस समाज के उच्चशिक्षित लोगों से करते है। इसलिए चंदन के मित्र रामहेत बिझनेस में कमाया हुआ पैसा समाज के उत्थान के लिए देने को तैयार होते है। नंदलाल वकालत या कानूनी मामलों में अपने लोगों की ओर से शोषण और अत्याचार के मुकदमें मुफ्त में लडने के लिए तैयार होते है और रतन प्रशासनिक सेवा में जाकर अपने लोगों की प्रशासनिक स्तर पर मदद करने के लिए तत्पर रहने की बात कहता है। सवर्ण मानसिकता वाले लोग दलितों को अपनी तरह मनुष्य नहीं मानते। उनके साथ अस्पृश्यता का व्यवहार करते है ऐसी विषमतावादी सोच रखनेवालों का विरोध करते हुए लेखक ने रजनी के माध्यम से यह प्रश्न किया है कि, "ब्राहमण और भंगी क्या दोनों की शरीर रचना एक जैसी नहीं होती? क्या दोनों हाड मांस के बने हुए नहीं होते? क्या दोनों के शरीर में बहनेवाले खून का रंग एक जैसा नहीं होता? फिर दोनों समान क्यों नहीं हो सकते"?१० इस प्रश्न का उत्तर लेखक ने कलेक्टर साहब के माध्यम से दिया है। वे कहते है कि, "व्यवस्था में बदलाव लाने के लिए जरुरी है कि समाज की सोच में बदलाव लाया जाय। इसके लिए समाज को नए ढंग से शिक्षित करने की आवश्यकता है। यह काम समाज के बीच रह रहें युवाओं को करना चाहिए। वे ही इसे बेहतर अंजाम दे सकते है।"११ इसी तरह व्यवस्था में परिवर्तन करने का लेखक का विचार उनकी आंबेडकरवादी सोच को दर्शाता है।

'छप्पर' उपन्यास में चित्रित शिक्षा का भाव -

आंबेडकरवाद में शिक्षा के महत्व को अधिक महत्व दिया है। महात्मा गौतम बुध्द ने शुद्र तथा स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार मिलने का समर्थन किया था। महात्मा फुले ने अविद्या के कारण शुद्रों का कितना अनर्थ हुआ है इसे स्पष्ट किया है। डॉ बाबासाहब आंबेडकर जी ने तो अपने जीवन मे जीन तीन उपास्य देवताओं को माना है उनमें सबसे पहली देवता विद्या है। उन्होंने इसके महत्व को स्पष्ट करते हुये कहा है, जिस तरह मनुष्य को जीवन जीने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है, उसी तरह विद्या की भी आवश्यकता होती है। ज्ञान के सिवा मनुष्य कुछ नहीं कर सकता। इस तरह उन्होंने अपने जीवन में शिक्षा को बहोत महत्व दिया है। इस शिक्षा तत्व को अधिकतर सभी दलित उपन्यासकारों ने अपने उपन्यास में महत्व दिया है।

'छप्पर' उपन्यास का नायक चंदन गॉव से शहर जाकर अपनी पढाई पूरी करता है, वह उच्चशिक्षित है उसे यह ज्ञात है कि हमारे शोषण का मुख्य कारण अज्ञान ही है। शिक्षा से ही हमारा विकास हो सकता है इसलिए वह बस्ती के बच्चों को पढाने के लिए स्कूल खोलता है। बस्ती के लोगों को शिक्षा का महत्व समझाते हुए कहता है कि, "हमारे शोषण का आधार क्या है, हमारे उत्थान और विकास में कौन से तत्व बाधक है, यह जाने बिना संघर्ष नहीं किया जा सकता। यह ज्ञान शिक्षा से हो सकता है, इसलिए शिक्षा का होना बहुत जरुरी है। जीवन की लडाईयों को लडने के लिए सबसे मारक और शक्तिशाली शस्त्र है शिक्षा। शिक्षा ही उत्थान और विकास का आधार है, इसलिए आप अपने बच्चों को अवश्य पढाइए।"१२ चंदन की प्रेरणा से बस्ती के

सभी बच्चों के अलावा वृध्द और महिलाओं ने भी पढना-लिखना शुरु किया। जिससे सभी दलितों में शिक्षा का प्रसार शुरु हो जाता है।

शिक्षा के इस महत्व को अनपढ सुक्खा भी जानता है। इसलिए वह गॉव के सवर्णो का विरोध सहन कर वह अपने बेटे चंदन को पढाने के लिए शहर भेजता है। वह अपनी पत्नी रमिया को समझाते हुए कहता है कि, "चुप रह पगली, कोई पेट से बडा बनकर आता है? पढ-लिखकर बडे बनते है सब। क्या पता हमारा चंदन भी कल को कलट्टर या दरोगा बन जाए।"१३ व्यक्ति के शिक्षा की सार्थकता इस बात में है कि वह अपने साथ-साथ अपने समाज का भी विकास करने के लिए प्रयत्नशील रहे। लेखक ने यही आंबेडकरवादी विचार चंदन के माध्यम से व्यक्त किये है। चंदन के शब्दों में- "मैं अपनी शिक्षा का उपयोग अपने दीन-हीन समाज के उत्थान के लिए करुंगा। मैं उन पीडित, शोषित और उपेक्षित लोगों को ऊपर उठाने के लिए काम करुंगा, जो कीडों मकौडों की तरह जीते है।"१४ ऐसा शिक्षा का उद्‌देश्य होना चाहिए ऐसा आंबेडकरवाद का मानना है।

निष्कर्ष -

जयप्रकाश कर्दम जी का 'छप्पर' यह उपन्याय संवैधानिक मूल्यों को लेकर प्रस्तुत होता है। इस उपन्यास में लेखक ने स्वातंत्र, समता, बंधुता, सामाजिक न्याय, तथा शिक्षा के प्रति दलित समाज का वैचारिक दृष्टि से विचार करना तथा सामंती, ब्राहमणी, शोषण उत्पीडन और जातिगत भेदभाव से मुक्ति पाने के लिए अनथक संघर्ष करने की प्रेरणा यह उपन्यास देता है। साथ ही युवाओं में सामाजिक सम्मान की भावना को जागृत कर स्वाभिमान से जीने की ललक पैदा करता है। इस उपन्यास ने दलित आक्रोश और दलित चेतना को नई दिशा देने का काम किया है। आजादी के बाद स्वातंत्र, समता, बंधुता, सामाजिक न्याय, तथा शिक्षा आदि मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास लेखक ने किया है। मानवीय भावों तथा एहसासों का संस्पर्श, ब्राहमणवादी मुखौटे को उखाडने की कोशीश यह उपन्यास करता है। संविधान के अनुसार इस देश में प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान और स्वाभिमानपुर्वक जीने का हक है यह इस उपन्यास के पात्रों के माध्यम से दर्शाया गया है। नई पीढि के पात्र चंदन, रजनी, कमला के माध्यम से त्याग, संघर्ष, सामाजिक तथा सास्कृंतिक परिवर्तन को दर्शाया गया है। तो पुरानी पीढि के सुक्खा और हरिया के माध्यम से पुरानी पीढि के संघर्ष का चित्रण किया है।

संदर्भ सूची

१) छप्पर- जयप्रकाश कर्दम, राहुल प्रकाशन, शहादरा, दिल्ली- ३२ प्रथम संस्करण १९९४ पृष्ठ क्र. ६४
२) छप्पर- जयप्रकाश कर्दम, राहुल प्रकाशन, शहादरा, दिल्ली- ३२ प्रथम संस्करण १९९४ पृष्ठ क्र. ६५
३) छप्पर- जयप्रकाश कर्दम, राहुल प्रकाशन, शहादरा, दिल्ली- ३२ प्रथम संस्करण १९९४ पृष्ठ क्र. १०९
४) छप्पर- जयप्रकाश कर्दम, राहुल प्रकाशन, शहादरा, दिल्ली- ३२ प्रथम संस्करण १९९४ पृष्ठ क्र. ३७
५) छप्पर- जयप्रकाश कर्दम, राहुल प्रकाशन, शहादरा, दिल्ली- ३२ प्रथम संस्करण १९९४ पृष्ठ क्र. ३७
६) बोल महामानवाचे- अनुवाद आणि संपादन -डॉ. नरेंद्र जाधव (खंड-१),ग्रंथाली प्रकाशन, माटुंगा, मुबंई- १६, संस्करण:२४ आक्टोंबर २०१२ पृष्ठ क्र. १२६
७) छप्पर- जयप्रकाश कर्दम, राहुल प्रकाशन, शहादरा, दिल्ली- ३२ प्रथम संस्करण १९९४ पृष्ठ क्र. १०९
८) छप्पर- जयप्रकाश कर्दम, राहुल प्रकाशन, शहादरा, - ३२ प्रथम संस्करण १९९४ पृष्ठ क्र. १००
९) छप्पर- जयप्रकाश कर्दम, राहुल प्रकाशन, शहादरा, दिल्ली- ३२ प्रथम संस्करण १९९४ पृष्ठ क्र. ३७,३८
१०) छप्पर- जयप्रकाश कर्दम, राहुल प्रकाशन, शहादरा, दिल्ली- ३२ प्रथम संस्करण १९९४ पृष्ठ क्र. ८३
११) छप्पर- जयप्रकाश कर्दम, राहुल प्रकाशन, शहादरा, दिल्ली- ३२ प्रथम संस्करण १९९४ पृष्ठ क्र. ८३
१२) छप्पर- जयप्रकाश कर्दम, राहुल प्रकाशन, शहादरा, दिल्ली- ३२ प्रथम संस्करण १९९४ पृष्ठ क्र. ४१
१३) छप्पर- जयप्रकाश कर्दम, राहुल प्रकाशन, शहादरा, दिल्ली- ३२ प्रथम संस्करण १९९४ पृष्ठ क्र. ०९
१४) छप्पर- जयप्रकाश कर्दम, राहुल प्रकाशन, शहादरा, दिल्ली- ३२ प्रथम संस्करण १९९४ पृष्ठ क्र. ३९